आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:08/09/2022; Accepted:13/09/2022; Reviewed: 21/09/2022; Published:24/09/2022

रामधारी सिंह ' दिनकर ' :राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर

विजया अमृत
सहायक प्राध्यापिका
शारदा विलास कॉलेज , मैसूरु

विजया अमृत, रामधारी सिंह ' दिनकर ':राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर' , आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 3/सितंबर 2022, (202-205)

राष्ट्रीयता एक मनोवैज्ञानिक भावना है जो प्रत्येक राष्ट्र के निवासियों में पायी जाती है । 'राष्ट्र 'शब्द अंग्रेजी भाषा के 'नेशन 'शब्द का हिंदी रूपांतरण है। 'नेशन' शब्द लैटिन भाषा के 'नेशियो' शब्द से बना है। इसका तात्पर्य जन्म जाति से होता है। वर्तमान युग में राष्ट्रीयता एक मानसिक तथा आध्यात्मिक भावना है जिसके लिए अनेक तत्व उत्तरदायी होते हैं ।

आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता :

हिंदी साहित्य के हर एक चरण में कहीं न कहीं राष्ट्रीयता की भावना देखने को मिलती है ।आधुनिक हिंदी साहित्य में तो राष्ट्रीयता प्रचुर मात्रा में देखने को मिलती है। राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने में आधुनिक हिंदी साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है और इस समय के कवियों में अगर सबसे श्रेष्ठ स्थान किसी का है तो वह रामधारी सिंह दिनकर का है।

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर थे ।इनका जन्म 23 सितंबर सन 1908 में बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था ।उनके पिता का नाम रवि सिंह और माता का नाम मनरूप देवी था ।दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे और जब दिनकर मात्र 2 वर्ष के थे तब उनके पिता की मृत्यु हो गई । इनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय में हुई हाई स्कूल की शिक्षा इन्होने मोकामाघाट के हाई स्कूल से प्राप्त की । मैट्रिक के बाद उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बीए ऑनर्स किया । उन्होंने 4 साल तक बिहार सरकार में सब रजिस्ट्रार और प्रचार विभाग के उप निदेशक के रूप में काम किया। दिनकर जी राजनीतिक रूप में भी सक्रिय थे । उन्होंने 1952 से लेकर 1964 तक राज्यसभा के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

दिनकर की पहली कविता 1924 में " छात्र सहोदर" नामक पत्र में प्रकाशित हुई थी। दिनकर का पहला कविता संग्रह " रेणुका" नवंबर 1955 में प्रकाशित हुआ था।

रेणुका : रेणुका मैं दिनकर ने अतीत के गौरव का सहज और सम्मानजनक वर्णन किया है।साथ ही वर्तमान परिवेश की निरसता से त्रस्त अपने मन की वेदना को दर्शाया है।

रेणुका में संकलित मुख्य कविताएँ हैं-

मंगल आह्वान
तांडव
हिमालय
मिथिला
बोधिसत्व आदि।

निम्नलिखित पंक्तियाँ हिमालय कविता से संकलित है :

मेरे नगपति ! मेरे विशाल!
साकार दिव्य ,गौरव विराट,
पौरुष के पूंजीभूत ज्वाल ।
मेरी जननी के हिम -किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल ।[1]

इन पंक्तियों द्वारा कवि भारतवासियों को उनके गौरवशाली अतीत की याद हिमालय पर्वत के गौरवगान से दिला रहे हैं।

हिमालय कविता की ही अन्य पंक्तियाँ हैं:

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ
जाने दे उनको स्वर्ग धीर
पर फिर हमें गांडीव- गदा
लौटा दे अर्जुन -भीम वीर ।।[2]

प्रस्तुत पंक्तियों में रामधारी सिंह दिनकर भारतवासियों जागृत कर रहे हैं। वो उन्हें जागृत करने में कहीं ना कहीं पूरी तरह से सफल रहे हैं।

वह लोगों से आह्वान कर कह रहे हैं कि आज युधिष्ठिर की नहीं बल्कि आज अर्जुन और भीम जैसे वीर योद्धाओं की जरूरत है जो हमें ब्रिटिश शासकों से मुक्ति दिला सके।

दिनकर की अन्य मुख्य रचनाएँ निम्नलिखित हैं:

हुंकार - हुंकार में कवि ने अतीत के गौरव गान की अपेक्षा वर्तमान समय में ब्रिटिश शासन के प्रति आक्रोश प्रदर्शन अधिक प्रखर रूप से किया है ।

हुंकार में संकलित मुख्य रचनाएँ हैं :
हाहाकार
अनल -किरीट
शहीद स्तवन
सिपाही
विपथगा
दिल्ली आदि ।
दिनकर की कविता कलम आज उनकी जय बोल की कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है -

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटिकाई जिनमें चिंगारी
जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल ।[3]

प्रस्तुत पंक्तियों में दिनकर ने शहीदों को ओजपूर्ण श्रद्धांजलि दी है।
उर्वशी ,कुरुक्षेत्र ,रश्मिरथी आदि उनकी अन्य मुख्य रचनाएँ हैं। दिनकर की कविता 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है 'की कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है –

सदियों की ठंडी -बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है
दो राह ,समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।[4]

प्रस्तुत पंक्तियों में दिनकर ने ब्रिटिश शासन का प्रखर विरोध किया है । उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। उपरोक्त सभी पंक्तियों से यह स्पष्ट पता चलता है कि दिनकर जी राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर थे । उनकी रचनाओं ने सुप्त अवस्था में पड़े भारतवासियों को जागृत करने का कार्य किया है । उनकी क्रांतिकारी रचनाओं को देखते हुए रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है कि - "दिनकर देश में क्रांतिकारी आंदोलन को आवाज दे रहे हैं।"

नामवर सिंह ने लिखा कि-
“वह वास्तव में अपने युग के सूर्य थे।" मशहूर कवि प्रेम जनमेजय ने लिखा है कि "आज़ादी के समय,चीन के हमले के समय दिनकर ने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों के बीच राष्ट्रीय चेतना को बढ़ाया।"[5]

निष्कर्षत:

यह कहा जा सकता है कि दिनकर जी की कविताएँ आधुनिक हिंदी साहित्य में सूर्य की तरह सदैव चमकती रहेंगी। आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना को जितनी प्रबल तरीके से दिनकर जी ने अपनी रचनाओं में दर्शाया है उतना शायद ही किसी ने दर्शाया होगा। उन्होंने भारतीय जनता को झकझोर कर रख दिया और उन्हें अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया।उनके अतुल्य और अनुपम कृतियों के लिए भारतवर्ष हमेशा उनका ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ:

1. स्वतंत्रता पुकारती, रामधारी सिंह 'दिनकर', साहित्य अकादेमी, पृ 263, 2006
2. स्वतंत्रता पुकारती, रामधारी सिंह 'दिनकर', साहित्य अकादेमी, पृ 263, 2006
3. हुंकार (शहीद स्तवन), रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, 1938
4. जनतंत्र का जन्म, रामधारी सिंह 'दिनकर', पृ 43
5. Wikipedia

****